महाकाव्य और मूल्य परक संवेदना (साकेत)

डॉ. सरिता जैन
सह प्राध्यापक - हिन्दी
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

हिन्दी के वर्तमान कवियों में मैथिलीशरण जी का एक विशिष्ट स्थान है। गुप्त जी ने लगभग तीस वर्षो तक रचनायें करके हिन्दी साहित्य की सेवा की। गुप्त जी के विषय में उमाकांत जी का कथन है कि -

''मैथिलीशरण गुप्त वर्तमान काल के सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय कवि है। तुलसी को छोड़कर उन्हें सबसे अधिक पाठक प्राप्त हैं। तुलसी के समान ही आवालवृद्ध उनकी कविता पर मुग्ध हैं - उनके अनन्त काव्य-पारावार का अवगहन करने पर सभी को मनोनीत भाव विचार मणियाँ प्राप्त है। ऐसे कृतकार्य कवि और उसके काव्य से संबंध आलोचनात्मक साहित्य का प्रणयन अवश्यम्भावी था।''[1]

साकेत आधुनिक युग के श्रेष्ठतम महाकाव्यों में से एक है। इसकी रचना गुप्त जी ने कवीन्द्र रवीन्द्र के 'काव्येर उपेक्षित' निबन्ध से प्रभावित होकर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के 'उर्मिला-विषयक उदासीनता' लेख के फलतः की थी। साकेत में वह संकल्प ही प्रफिलित हुआ है। प्रकाशन के पूर्व ही 'उर्मिला काक' की रचना हो चुकी थी पर गुप्त जी का राम भक्त हृदय उसमें परिवर्तन करता रहा और अन्त में वह साकेत के रुप में प्रकाशित हुआ। साकेत का काव्य वैभव अत्यन्त समृद्ध है। इसमें लगभग सभी नवरस विद्यमान है। श्रृंगार रस इसका अंगीरस तथा अन्य रस अंगी रूप में आए है। उर्मिला लक्ष्मण परिहास में संयोग श्रृंगार, उर्मिला-विरह में विप्रलंभ तथा लंका-युद्ध में वीर रस के श्रेष्ठ उदाहरण है -

'दल बादल भिड़ गये, धरा धँस चली धमक से,
भड़क उठा क्षय कड़क तड़क से चमक, दमक से।
रण-भेरी की गमक सुभट नट से फिरते थे,
ताल ताल पर रूण्ड-मुण्ड उठते गिरते थे।[2]

साकेत में गुप्त जी के जीवन व्यापी अनुभवों का सार तथा उसका जीवन दर्शन सहज ही प्राप्त होता है। गुप्त जी हृदय एवं व्यक्तित्व भारतीय और हिन्दू संस्कृति का प्रतीक है और साकेत में इसकी झलक हमें सर्वत्र दिखाई देती है। जैसा कि ईश्वर के मांगलिक रूप के वर्णन से स्वयं स्पष्ट होता है -

''होता है हित के लिए सभी
करते है हरि क्या अहित कभी।''[3]

साकेत में 'काव्योपेक्षित' उर्मिला का ही नहीं वरन् कैकयी का भी चरित्र बड़ी ही श्रेष्ठता से ऊँचा उठाया है। चित्रकूट की सभा में कैकयी का अनुताप इसका स्पष्ट उदाहरण है। शिल्प की दृष्टि से भी साकेत गुप्त जी का श्रेष्ठतम काव्य है। साकेत में गुप्त जी ने अनेक स्थिर-मतिमान, रम्य-आकर्षण, कालात्मक और प्रभावपूर्ण चित्र उपस्थित किए है। साकेत की भाषा प्रौढ़ एवं प्रांजल खड़ी बोली है। इसमें संस्कृत शब्दों को आधार स्वरुप ग्रहण किया गया है। साकेत के विषय में डॉ. कमलाकान्त पाठक का कहना है- कि कवि का

उद्देश्य मानव महत्व की प्रतिष्ठा करते हुए उसके तीन स्वरुपों को प्रत्यक्ष करना है। (1) राम-राज्य की आदर्श समाज व्यवस्था काम्य ही नहीं साधना का लक्ष्य भी है। (2) उसकी उपलब्धि चरित्रोत्कर्ष के द्वारा संभव हो सकती है, जो त्यागमयी जीवन निष्ठा और प्रेममयी कर्तव्य साधना द्वारा निर्मित होता है। (3) नारी का अपना व्यक्तित्व है, वह जीवन-साधना में सहधर्मिणी है और उसकी सत्ता सम्पूर्ण जीवन में व्याप्त है। उसकी उपेक्षा प्रेम और त्याग से युक्त जीवन-संतुलन को नष्ट कर देती है तथा कर्म क्षेत्र का सौन्दर्य भी उसी अनुपात में घट जाता है।[4]

साकेत में गुप्त जी ने राम को वाल्मीकि और तुलसी के रुप से पृथक कर दिया है। वह अवतार भले ही हो पर लौकिक मानव से भिन्न नहीं है, वह नर पहले हैं अवतार बाद में है। वह पृथ्वी पर स्वर्ग का सन्देश प्रसारित नहीं करते, अपितु मनुष्य को ही ईश्वरता प्राप्त कराने के लिए कृत संकल्प हैं -

भव में नव में वैभव व्याप्त कराने आया, नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।

साकेत के राम एक ऐसे आदर्श चरत्रि हैं जिनमें नरत्व भी है और नाराणत्व भी। इन दोनों गुणों का उनमें अपूर्व सामंजस्य हुआ है। इसका कारण गुप्त जी की बुद्धि और भावना है, उन्हें राम का वही रूप चित्रित करनाहै जो समकालीन परिस्थितियों में सही बैठे, आज का बुद्धिवादी मानव आलौकिकता में विश्वास नहीं करता। वह अपने ही तुल्प आदर्श पात्र का सहज ही अनुकरण कर सकता है अतः गुप्त जी ने राम में नरत्व का आभास कराया है।

साकेत का पूर्ण अध्ययन करके हम कह सकते है कि साकेत गुप्त जी के प्रौढ़ पथ में एक मार्गस्तंभ है तथा उनकी सभी रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ है। इसमें गुप्त जी के व्यक्तित्व के हमें सम्यक दर्शन होते है। अतः मानवीय संबंधो की यह सर्वश्रेष्ठ रचना गुप्त जी का महाकाव्य ही है।

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी का कहना है कि साकेत के नायकत्व का प्रश्न काफी जटिल है। परन्तु यह त्रुटि के आधार पर हम उसे महाकाव्य की श्रेणी से वंचित नहीं कर सकते, क्योंकि महाकाव्य की व्यापता और उसके महत्व के द्योतक कोई सुनिश्चित प्रतिमान नहीं हो सकते और अन्ततः इस संबंध का निर्णय मतभेद से परे नहीं हो सकते और अंततः इस संबंध का निर्णय, मतभेद से परे नहीं हो सकता। किन्तु 'साकेत' काव्य का साहित्यिक जगत में जो सम्मान हैं, हिन्दी के ऐतिहासिक विकास में उसकी जो देन है, युग चेतना के जो नवोन्मेष उसमें अपनी सुन्दर आभा बिखेर रहे हैं, उन्हें देखते हुए साकेत, को महाकाव्य न कहना अन्यायहोगा। साकेत महाकाव्य ही नहीं, आधुनिक हिन्दी का युग प्रवर्तक महाकाव्य भी है।[5] डॉ. नागेन्द्र ने इसे जीवन काव्य माना है।[6]

हम कह सकते है कि जिन उद्देश्यों तथा प्रयोजनों को लेकर इस महाकाव्य की सृष्टि की उनमें उनको पूर्ण सफलता मिली है यह महाकाव्य न केवल समृद्ध रामकाव्य परम्परा का दैदीप्यमान आलोक स्तंभ है अपितु आधुनिक हिन्दी काव्य में भी आभा मंडल की भाँति चमक रहा है। इसमें कवि ने विस्मृता तथा उपेक्षिता उर्मिला को भव्य तथा उदात्त चरित्रोत्कर्ष प्रदान किया है और अपने युगधर्म भारत की सांस्कृतिक अस्मिता एवं राष्ट्रीयता के साथ भी सांगोपांग पहल की है। इसमें महाकाव्य में मानवता तथा जीवन मूल्य विशेषाग्रह के साथ रेखांकित हुए है।

ISSN 2395-051X

सन्दर्भ

1. मैथिलीशरण गुप्त कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता, पृ. प्रस्तावना
2. साकेत - पृ. 481
3. साकेत - पृ. 160
4. मैथिलीशरण गुप्त व्यक्ति और काव्य पृ. 53
5. आचार्य नंददुलारे वाजपेयी आधुनिक साहित्य पृ. 54
6. डॉ. नगेन्द्र साकेत एक अध्ययन, पृ. 257